International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 11-12

आलमशाह ख़ान की कहानियों में अभिव्यक्त स्त्री–पुरुष संबंध

राजपाल सिंह शेखावत

गाँव व पोस्ट– टाटनवां, ज़िला–सीकर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

समकालीन सामाजिक जीवन अत्यधिक जटिलताओं से भरा हुआ है और इन जटिलताओं का प्रभाव स्त्री–पुरुष संबंधों पर भी पड़ा है। वैवाहिक संबंधों में अब स्त्री की भूमिका बच्चे पैदा करने तक ही सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वह भी पुरुष के साथ क़दम से क़दम मिला कर आगे बढ़ रही है। इसी कारण न केवल विवाह की अनिवार्यता का महत्त्व कम हुआ है वरन स्त्री–पुरुष संबंधों में तलाक़ और अलगाव जैसी स्थितियां भी उत्पन्न हो रही हैं। स्त्री–पुरुष का विवाह के बिना भी साथ रहना अब सामान्य बात होने लगी है। स्त्री–पुरुष संबंधों में आए इन बदलावों का दूसरा पक्ष भी है। निम्न–दलित वर्ग में आज भी स्त्री–पुरुष संबंधों की मूल संरचना में कोई परिवर्तन अभी तक नहीं आया है। इसके लिए सामाजिक और आर्थिक दोनों कारक ज़िम्मेदार हैं। समाज की मुख्यधारा से यह वर्ग पूरी तरह अलग है और आर्थिक रूप से पिछड़ा। स्त्री यहाँ आज भी प्रताड़ित है, अपने पति के साथ–साथ वह सामंती वर्ग के शोषण का भी शिकार है। पुरुष स्थितियों के आगे विवश हैं या फिर स्त्री को ही इसके लिए ज़िम्मेदार ठहराते हैं। आलमशाह ख़ान अपनी कहानियों में इसी परिप्रेक्ष्य में स्त्री–पुरुष संबंधों को देखने का प्रयास करते हैं।

आलमशाह ख़ान की उच्च–मध्यवर्गीय जीवन से संबंधित अधिकांश कहानियों में वैवाहिक संबंधों में बंधन और मुक्ति का द्वंद्व दिखाई देता है। 'बांधो ना नाव इक ठाँव' कहानी की शैलबाला अपने मम्मी–पापा को वैवाहिक बंधन में ही नष्ट होते देखती है। इसीलिए वह सोचती है– ''कैसा कंटीला होता है नाता पति–पत्नी का। कैसा कठोर–कराल होता है बंधन विवाह का। साथ–साथ रहना–जीना, ज़हर ही तो हो जाता है। इस ज़हर को पीते... अपने बच्चों को पिलाते... धीरे–धीरे रिस–रिसकर मरना... स्लो–पाइजनिंग–सा... फिर भी साथ–साथ रहना–सहना।''[1] शैल अपने माता–पिता की तरह जीना नहीं चाहती, वह धवल से विवाह करने से पूर्व ही उससे विवाह विच्छेद का अनुबंध करके 'मुक्ति–पत्र' पर हस्ताक्षर करवा लेती है। लेकिन यह मुक्ति–पत्र ही परेशानी का सबब बन जाता है। विवाह की पहली वर्षगांठ पर जब वह धवल को उपहार में मुक्ति–पत्र लौटाकर संबंधों को सुधारने की कोशिश करती है तो धवल उसे उपहार में वैसा ही मुक्ति–पत्र थमा देता है, शैल के हस्ताक्षर के लिए। 'आँसुओं का अनुवाद' कहानी में भी माता–पिता के वैवाहिक संबंधों में तनाव का दुष्प्रभाव बेटी के जीवन पर पड़ता है। संजू ने होश संभालने के साथ ही अपने मम्मी–पापा को लड़ते–झगड़ते देखा है। अपनी बेटी के भविष्य को देखते हुए वे अलग भी नहीं हो पाते, लेकिन संजू पर इस रिश्ते का आतंक इतना घर कर जाता है कि विवाह की पहली ही रात वह ससुराल छोड़कर वापस घर लौट आती है।

'इंद्रधनुष के मैले रंग' कहानी प्रेम विवाह और पत्नी के पूर्ण समर्पण से उत्पन्न वैमनस्य को प्रकट करती है। सुदेश और सुरेखा विवाह करने से पूर्व एक–दूसरे को जानने–समझने के लिए सालभर तक साथ रहते हैं। विवाह के बाद सुरेखा के पूर्ण समर्पण से सुदेश को वह पत्नी की जगह आया लगने लगती है और दोनों में दूरियां बढ़ने लगती हैं। सुरेखा, सुदेश से कहती है– ''यदि मेरे इंद्रधनुष के रंग तुम्हारे लिए मैले हो गए हैं तो तुम्हारा आकाश भी मुझे बौना और तंग लगने लगा है। तुम्हारे इंद्रधनुष के बाण भी मुझे अब नहीं लगते–बेधते। मैं तो किसी की अपनी होकर और उसे अपना बनाकर सौ टका जीना चाहती हूँ। मानवीय संबंधों में सफलता की एक ही क्लास होती है फर्स्ट–क्लास बस। सैकेंड–थर्ड डीविज़न या सप्लीमेंट्री जैसी स्थितियां उसमें नहीं होती।''[2] जब सुदेश और सुरेखा अपनी पहचान छिपाकर अनजाने चेहरों में सुख ढूंढने निकलते हैं तो अंत में अपनी बाँहों में एक–दूसरे को ही पाते हैं।

'पग– बाधा' अधेड़ उम्र में किए गए विवाह की समस्याओं को प्रस्तुत करती है। आलोक अपनी पत्नी की मृत्यु और बेटे–बेटियों के दूर चले जाने से उत्पन्न अकेलेपन को दूर करने के लिए कॉलेज के दिनों की प्रेमिका कविता से विवाह कर लेता है। कविता में माँ बनने की संभावना देखकर वह आक्रोशित हो जाता है– ''क्या बकती हो, नाती–पोतों के साथ अपना पिल्ला झुलाऊँगा इन बूढ़ी बांहों में... और तुम्हें भी कोई भला लगेगा धोली माँग दूध–पूत ?''[3] वह कविता पर गर्भपात करवाने के लिए दबाव डालता है। माँ बनने की संभावना तो बाद में निर्मूल साबित होती है लेकिन आलोक के व्यवहार से आहत कविता उसे छोड़कर चली जाती है।

'एक और सीता' तथा 'आसमानी बाप' में निम्नवर्गीय स्त्रियों का गांव के ठाकुरों द्वारा यौन शोषण किया जाता है। ठाकुरों के आतंक और डर के कारण पति लाचार हैं। 'एक और सीता' की सीती पति रमिया के मरते ही विद्रोह कर देती है और ठाकुर को धमकाकर भगा देती है। 'आसमानी बाप' में पति का आक्रोश ठाकुर की बजाय अपनी पत्नी पर ही उतरता है कि उसके बेटे की सूरत उसमें क्यों नहीं मिलती। वह चाहता है कि पत्नी बेटे को छोड़कर कहीं दूर उसके साथ चले, जहां ठाकुर का आतंक न हो और वह केवल उसी की पत्नी बनकर रहे। पत्नी अपने बेटे और बूढ़े सास–ससुर को छोड़ने के लिए तैयार नहीं। पति उसे कहता है– ''तो पराये मूत को, अपना पूत मान कर, परे मर यहां से। तू नहीं तो तेरी बहन ओर सही, नया घर अब बसाऊँ तो दोष न दीजियो।''[4]

'अबला जीवन का गणित' कहानी में पति की नज़र में पत्नी का अस्तित्व योनि मात्र है, जिससे वासना की पूर्ति हो सके। जस्सो का विवाह चौदह वर्ष की उम्र में होता है, और तीस वर्ष की होते–होते वह दस बार गर्भवती होती है। 'मुरादों भरा दिन' में पुरुष के अहम् और स्त्री के सामने अपराध–बोध से नीचा न देखने की आकांक्षा ही नूरी को वेश्या बना देती है। नूरी ने अपने शोहर सत्तार को एक दिन मंगू के साथ आपत्तिजनक अवस्था में क्या देखा, सत्तार पर उसकी इज़्ज़त उतारने का भूत सवार हो गया। स्वयं सत्तार ने ही उसे मंगू के साथ शारीरिक संबंध बनाने के लिए मजबूर किया और फिर उसे धंधे के लिए कोठे पर ही पहुंचा दिया।

स्त्री–पुरुष के विवाहेतर संबंधों को भी आलमशाह ख़ान ने अपनी कहानियों का विषय बनाया है। उनके यहां विवाहेतर संबंध, वे चाहे निम्न–दलित वर्ग के स्त्री–पुरुषों में हो या उच्च–मध्यवर्गीय स्त्री–पुरुषों में, स्त्री की सामाजिक–आर्थिक विवशता के चलते बनाये गये हैं। निम्न–दलित वर्ग में विवाहेतर संबंधों के लिए

आर्थिक अभाव प्रमुख कारण बनता है। 'आवाज़ की अरथी' कहानी में नरसिंघा का बाप अपनी पत्नी छग्गी और नरसिंघा को एक सौ बीस रुपये में लंगड़े फन्ने को बेच देता है। फन्ने को पोस्त के नशे की लत है और वह छग्गी तथा नरसिंघे की कमाई से नशे की तलब पूरी करता है। 'मुरादों भरा दिन' में पैसे के लिए सत्तार अपनी बीवी नूरी को वेश्या बना देता है।

'किराये की कोख' कहानी की कुई एक पुरुष से दूसरे और दूसरे से तीसरे के हाथों बिकती जाती है। दो बच्चों की माँ कुई को उसका पति, सगुनवा को बेच देता है। बच्चे कुई के साथ न आयें, इसके लिए सगुनवा बच्चों का 'झगड़ा' अलग से भरता है। कुई लड़कों को ही जन्म देती है इसीलिए अब सगुनवा का दोस्त आगेवान उसे अपने घर डालना चाहता है क्योंकि उसके पहली दोनों पत्नियों से केवल बेटियां ही हैं। वह सगुनवा से कहता है– ''चाहे तो बरस दो–एक टले अपनी कुई को फेर लेना। बस जे समझ हमारा बीज रखने–पोसने कूँ तू अपना बासन–भाँडा हमको दे रिया और मैं तुम कूँ।''[5] आगेवान तीन सौ रुपये और अपनी दूजी के बदले कुई का सौदा सगुनवा से कर लेता है ताकि कुई की किराये की कोख से वह बेटा पैदा कर सके। बेटा जनना कुई के हाथ में तो था नहीं और जब सातवें महीने में ही उसने बेटी को जन्म दिया तो आगेवान ने उसे रात में ही धक्के मारकर घर से बाहर पटक दिया। ''वह भेंटी मार कुठरिया में घुस गया और आव देखा न ताव, वैसी ही रक्त सनी कुई को बाहर घसीट लाया। गंदी गालियां उगलता वह गरजा– हया मरी बेसरम, चुड़ैल... पराया तुखम ले के मेरे यहां आ मरी। इत्ती दगा ! ये फरेब ! करम के संग धरम भी गया। ...उसने बिफरकर एक ठोकर उसके धँसे पेट पर धर दी। वह मरी चीख तानकर तड़फने लगी। फिर भी आगेवान न रुका। उसने उसे कोलू में भर अपने आँगन के पार पोल में डाल दिया... फिर मुड़ा और नयी जायी हिलहिल लट को भी उस पर पटक दिया।''[6]

स्त्री–पुरुष के अन्य संबंधों में 'पुल की मंजिल' सौतेले पिता और पुत्री के संबंधों की कहानी है। उमी को उसके सौतेले पापा एक सेतु की तरह मानते हैं जिसके माध्यम से उसकी मम्मी तक पहुंचा जा सके। 'काँटों नहाई ओस' धर्म के पिता और पुत्री के संबंधों को चित्रित करती है। मुंसानी के पीहर के नवल काका हिंदू होने का बाावजूद अपने गांव की मुसलमान बेटी से सगी बेटी के समान ही स्नेह का रिश्ता रखते हैं। 'काग़ज़ के पुल' विधवा बहन और उसके दो छोटे भाईयों के संबंधों की कहानी है, जिनके पिता नहीं है। तीनों भाई–बहन एक–दूसरे के सहयोग और समर्पण से घर भी चलाते हैं और पढ़ाई भी करते हैं। 'नेह के रंग' देवर–भाभी के स्नेह के रिश्ते में रची–बसी कहानी है। राजन आठ साल का है और भाभी तेरह–चौदह साल की। अंत तक दोनों में वही लड़कपन वाला प्रेम कायम रहता है। 'किराये की कोख' और 'आसमानी बाप' माँ–बेटे के संबंधों की कहानियां हैं। 'किराये की कोख' माँ–बेटे के संबंधों के विकृत रूप को रेखांकित करती है जिसमें परिस्थितियों की शिकार एक माँ अपने पुत्र के आगे ही यौनाचार के लिए प्रस्तुत हो जाती है।

आलमशाह ख़ान की गिनती समांतर कहानी आंदोलन के प्रमुख कहानीकारों में की जाती है। समांतर कहानी आंदोलन का मूल स्वर मुख्यधारा से कटे हुए समाज की पक्षधरता के रूप में देखा जा सकता है। आलमशाह ख़ान ने स्त्री–पुरुष संबंधों को भी उसी परिप्रेक्ष्य में अपनी कहानियों में रेखांकित किया है। स्त्री पुरुष के हाथों प्रताड़ित होती है। दलित और शोषित वर्ग की स्त्री पुरुष की सामंतवादी मानसिकता के चलते दोहरे शोषण का शिकार है।

संदर्भ सूची

1. आलमशाह ख़ान, कथा–यात्रा, पृष्ठ 112।
2. वही, पृष्ठ 240।
3. वही, पृष्ठ 319।
4. वही, पृष्ठ 217।
5. वही, पृष्ठ 344।
6. वही, पृष्ठ 351।